रविवार 4 अक्टूबर, 2026

विषय — कल्पना

स्वर्ण पाठ: मत्ती 6: 13

"और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।"

उत्तरदायी अध्ययन: गलातियों 5: 25, 26

गलातियों 6 : 3, 7-9, 16

25 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।
26 हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।
3 क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है।
7 धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।
8 क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।
9 हम भले काम करने में हियाव न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।
10 इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ॥
16 और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्त्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 18: 25 (करेगा)

25 क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?

2. दानिय्येल 4: 1-3, 28-31, 33, 34, 36, 37

1 नबूकदनेस्सर राजा की ओर से देश-देश और जाति जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले जितने सारी पृथ्वी पर रहते हैं, उन सभों को यह वचन मिला, तुम्हारा कुशल क्षेम बढ़े!
2 मुझे यह अच्छा लगा, कि परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं, उन को प्रगट करूं।
3 उसके दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बड़े, और उसके चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रगट होती है! उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

28 यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया।
29 बारह महीने बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा,
30 क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?
31 यह वचन राजा के मुंह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकलती है कि राज्य तेरे हाथ से निकल गया,
33 उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और बैलों की नाईं घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस से भीगती थी, यहां तक कि उसके बाल उकाब पक्षियों के परों से और उसके नाखून चिडिय़ोंके चंगुलों के समान बढ़ गए॥
34 उन दिनों के बीतने पर, मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं, और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी स्तुति और महिमा यह कह कर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहने वाला है।
36 उसी समय, मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और मुकुट मुझ पर फिर आ गया। और मेरे मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने के लिये आने लगे, और मैं राज्य में स्थिर हो गया; और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी।
37 अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे॥

3. ओबद्दाह: 3, 4, 17 (से ;), 21 (और यह)

3 हे पहाड़ों की दरारों में बसने वाले, हे ऊंचे स्थान में रहने वाले, तेरे अभिमान ने तुझे धोखा दिया है; तू मन में कहता है,
4 कौन मुझे भूमि पर उतार देगा? परन्तु चाहे तू उकाब की नाईं ऊंचा उड़ता हो, वरन तारागण के बीच अपना घोंसला बनाए हो, तौभी मैं तुझे वहां से नीचे गिराऊंगा, यहोवा की यही वाणी है॥
17 परन्तु उस समय सिय्योन पर्वत पर बचे हुए लोग रहेंगे, ओर वह पवित्र स्थान ठहरेगा;
21 ... और राज्य यहोवा ही का हो जाएगा॥

4. लूका 4: 14, 15

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा।
15 और वह उन की आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे॥

5. लूका 18: 9-14

9 और उस ने कितनो से जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा।
10 कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला।

11 फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं
और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करने वाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेने वाले के समान
हूं।
12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।
13 परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-
पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।
14 मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो
कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह
बड़ा किया जाएगा॥

6. याकूब 1: 12-18

12 धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पाएगा,
जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।
13 जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी
बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।
14 परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंच कर, और फंस कर परीक्षा में पड़ता है।
15 फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।
16 हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ।
17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से
मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।
18 उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं
में से एक प्रकार के प्रथम फल हों॥

7. याकूब 4: 6-8

6 वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर
दीनों पर अनुग्रह करता है।
7 इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।
8 परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते
लोगों अपने हृदय को पवित्र करो।

8. भजन संहिता 50: 1, 6, 14, 15

1 ईश्वर परमेश्वर यहोवा ने कहा है, और उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक पृथ्वी के लोगों को बुलाया है।
6 और स्वर्ग उसके धर्मी होने का प्रचार करेगा क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी है॥
14 परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा, और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर।
15 और संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊंगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 17: 1-3, 8-11

तुम्हारी इच्छा पृथ्वी में हो, जैसा कि स्वर्ग में है।
जैसा कि स्वर्ग में पृथ्वी पर भी है, हमें यह जानने में सक्षम करें, कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वोच्च है।

और हमें प्रलोभन में न ले जाएँ, बल्कि हमें बुराई से बचाएं;
और परमेश्वर हमें प्रलोभन में नहीं ले जाता है, बल्कि हमें पाप, बीमारी और मृत्यु से बचाता है।

2. 516: 19-23

ईश्वर के स्वरूप में बना मनुष्य, पूरी पृथ्वी पर ईश्वर के अधिकार को धारण करता है और उसे दर्शाता है। ईश्वर के साथ हमेशा से मौजूद और अनंत होने के नाते, स्त्री और पुरुष मिलकर उस अनंत पिता-माता स्वरूप ईश्वर के गुणों को महिमामयी रूप में दर्शाते हैं।

3. 445: 19-26

क्रिश्चियन साइंस इंसानी इच्छाशक्ति को शांत करता है, सच और प्यार से डर को दूर करता है, और बीमारों को ठीक करने में ईश्वरीय ऊर्जा की सहज गति को दिखाता है। स्वार्थ, जलन, जुनून, घमंड, नफ़रत और बदले की भावना को ईश्वरीय मन दूर करता है, जो बीमारी को ठीक करता है। मानव इच्छा जो झूठ बनाती है और काम करती है, मेल-जोल के परमेश्वर के सिद्धांत को छिपाती है, वह स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है, और बीमारी का इलाज करने के बजाय उसका कारण बनती है। इंसानी इच्छाशक्ति, जो झूठ गढ़ती और उस पर काम करती है और तालमेल के ईश्वरीय सिद्धांत को छिपाती है, सेहत के लिए नुकसानदेह है और बीमारी का इलाज करने के बजाय बीमारी की वजह बनती है।

4. 272: 3-8

सच्चाई को समझने से पहले, सच्चाई की आध्यात्मिक समझ हासिल करनी ज़रूरी है। यह समझ तभी आती है जब हम ईमानदार, निस्वार्थ, प्यार करने वाले और विनम्र हों। "ईमानदार और अच्छे दिल" की ज़मीन में ही इसका बीज बोया जाना चाहिए; वरना इससे ज़्यादा फल नहीं मिलता, क्योंकि इंसान के स्वभाव में मौजूद जानवरों जैसी प्रवृत्ति इसे उखाड़ देती है।

5. 242: 1-20

पश्चाताप, आध्यात्मिक बपतिस्मा, और उत्थान के माध्यम से, नश्वर अपने भौतिक विश्वासों और झूठी व्यक्तित्व को बंद कर देते हैं। यह केवल समय का सवाल है "कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।" पदार्थ के दावों से इंकार आत्मा की खुशियों की ओर, मानव स्वतंत्रता और शरीर पर अंतिम विजय की ओर एक बड़ा कदम है।

स्वर्ग के लिए एक रास्ता है, सद्भाव; और ईश्वरीय विज्ञान में मसीह हमें इस मार्ग को दिखाता है। कोई और वास्तविकता नहीं है, अच्छे ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को जानने और इंद्रियों के दर्द और सुख से श्रेष्ठ होने के अलावा जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है।

स्व-प्रेम एक ठोस शरीर की तुलना में अधिक अपारदर्शी है। एक रोगी ईश्वर की आज्ञाकारिता में, प्रेम के सार्वभौमिक विलायक के साथ भंग करने के लिए हमें श्रम करना चाहिए, - आत्म-इच्छा, आत्म-औचित्य, और आत्म-प्रेम, - जो आध्यात्मिकता के खिलाफ युद्ध करता है और पाप का कानून मौत।

6. 191: 24-25

अस्तित्व का विज्ञान यह बताता है कि मनुष्य और अमरता आत्मा पर आधारित हैं।

7. 252: 15-17, 25-8

भौतिक इंद्रियों के झूठे सबूत, आत्मा की गवाही से बिल्कुल अलग हैं। भौतिक इंद्रियां सच्चाई के घमंड के साथ अपनी आवाज़ उठाती हैं और कहती हैं:

मैं पदार्थ की भव्यता में विराजमान हूँ। लेकिन एक स्पर्श, एक दुर्घटना, या ईश्वर का नियम किसी भी पल मेरी शांति को खत्म कर सकता है, क्योंकि मेरी सभी काल्पनिक खुशियां जानलेवा हैं। फूटते हुए लावा की तरह, मैं फैलती तो हूँ लेकिन अपनी ही निराशा के लिए, और सब कुछ भस्म कर देने वाली आग की तरह चमकती हूँ।

इसके विपरीत गवाही देते हुए आत्मा कहती है:

मैं आत्मा हूँ। मनुष्य, जिसकी इंद्रियां आध्यात्मिक हैं, मेरी ही छवि है। वह अनंत समझ को दर्शाता है, क्योंकि मैं अनंत हूँ। पवित्रता की सुंदरता, अस्तित्व की पूर्णता, अविनाशी महिमा — ये सब मेरे हैं, क्योंकि मैं ईश्वर हूँ। मैं मनुष्य को अमरता देती हूँ, क्योंकि मैं सत्य हूँ। मैं हर तरह के आनंद को अपने में समाहित करती हूँ और उसे देती हूँ, क्योंकि मैं प्रेम हूँ। मैं ऐसा जीवन देती हूँ जिसकी न कोई शुरुआत है और न ही कोई अंत, क्योंकि मैं जीवन हूँ। मैं सर्वोच्च हूँ और सब कुछ देती हूँ, क्योंकि मैं मन हूँ। मैं ही सबका मूल तत्व हूँ, क्योंकि 'मैं वही हूँ जो मैं हूँ'।

8. 339: 7 (तब से)-19

चूंकि ईश्वर ही सब कुछ है, इसलिए उसके विपरीत किसी चीज़ के लिए कोई जगह नहीं है। ईश्वर, यानी आत्मा ने ही सब कुछ बनाया और उसे अच्छा कहा। इसलिए बुराई, जो अच्छाई के उलट है, वह असली नहीं है और ईश्वर की बनाई हुई नहीं हो सकती। कोई पापी इस बात से कोई बढ़ावा नहीं पा सकता कि विज्ञान बुराई के असली न होने को साबित करता है, क्योंकि पापी तो पाप को ही असली मान लेगा — यानी जो चीज़ असली नहीं है उसे असली बना लेगा, और इस तरह "क्रोध के दिन के लिए क्रोध" जमा कर लेगा। वह खुद के ही खिलाफ़ एक साज़िश में शामिल हो रहा है — उस भयानक झूठ के खिलाफ़ जागने के मामले में, जिससे उसे धोखा दिया गया है। सिर्फ़ वे लोग, जो पाप के लिए पछतावा करते हैं और जो असली नहीं है उसे छोड़ देते हैं, वही बुराई के असली न होने को पूरी तरह समझ सकते हैं।

9. 542: 5-13

भले ही गलती झूठ के पीछे छिप जाए और अपराध को सही ठहराने की कोशिश करे, लेकिन गलती हमेशा छिपी नहीं रह सकती। सच्चाई अपने शाश्वत नियमों के ज़रिए गलती को उजागर कर देती है। सच्चाई पाप को खुद ही बेनकाब कर देती है और गलती पर बुराई की छाप लगा देती है। यहाँ तक कि अपराध को सही ठहराने या उसे छिपाने की सोच को भी सज़ा मिलती है। न्याय से बचना और सच्चाई को नकारना पाप को बढ़ावा देता है, अपराध को जन्म देता है, आत्म-नियंत्रण को खतरे में डालता है और ईश्वरीय दया का मज़ाक उड़ाता है।

10. 186: 11-20, 28-2

बुराई असल में कुछ नहीं है, क्योंकि यह सच्चाई की कमी है। यह कुछ भी नहीं है, क्योंकि यह किसी चीज़ की अनुपस्थिति है। यह अवास्तविक है, क्योंकि यह ईश्वर—जो सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी हैं—की अनुपस्थिति को मानकर चलती है। हर नश्वर इंसान को यह समझना चाहिए कि बुराई में न तो कोई शक्ति है और न ही कोई वास्तविकता।

बुराई खुद को ही सब कुछ मानती है। यह कहती है: "मैं एक वास्तविक सत्ता हूँ, जो अच्छाई पर हावी है।" यह झूठ बुराई के सारे दिखावे को खत्म कर देता है। बुराई की एकमात्र शक्ति खुद को नष्ट करना है। यह अच्छाई के एक छोटे से अंश को भी कभी नष्ट नहीं कर सकती।

नश्वर मन खुद के बारे में अनजान है, वरना वह कभी खुद को धोखा नहीं देता। अगर नश्वर मन को बेहतर बनने का तरीका पता होता, तो वह बेहतर बन जाता। चूँकि उसे अपने अलावा किसी और चीज़ में विश्वास करना ही होता है, इसलिए वह जड़ पदार्थ को ही देवता मान लेता है। इंसानी मन शुरू से ही मूर्तिपूजक रहा है; वह अन्य देवताओं को मानता रहा है और एकमात्र 'मन' (ईश्वर) के अलावा अन्य चीज़ों में विश्वास करता रहा है।

11. 30: 26-3

अगर हमने भौतिक समझ की गलतियों पर इतनी जीत हासिल कर ली है कि आत्मा का नियंत्रण हो सके, तो हम पाप से नफ़रत करेंगे और हर रूप में उसकी निंदा करेंगे। इसी तरह हम अपने दुश्मनों का भला कर सकते हैं, भले ही वे हमारी बातों का गलत मतलब निकालें। हम अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं चुन सकते, बल्कि हमें यीशु की सिखाई राह पर चलकर ही अपना उद्धार करना होगा। वे विनम्रता और शक्ति के साथ गरीबों को सुसमाचार सुनाते थे। अहंकार और डर सच्चाई का झंडा उठाने के लायक नहीं हैं, और ईश्वर कभी भी इसे ऐसे हाथों में नहीं सौंपेंगे।

12. 450: 19-24

एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट बुराई, बीमारी और मौत को कम करने के काम में लगा है; और वह ईश्वर—यानी अच्छाई—की सर्वव्यापकता और इन बुराइयों की निरर्थकता को समझकर उन पर विजय प्राप्त करेगा। उसके लिए बीमारी भी पाप की तरह ही एक प्रलोभन है, और वह ईश्वर की उन पर शक्ति को समझकर दोनों का ही उपचार करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6